Dainik Bhakar Date: 29.09.2018

सिटी ACTIVITY

एक्सीडेंट में चोटिल होने से नहीं, अक्सर लोग मरते हैं एसफेक्सिया की वजह से

वैष्णव विद्यापीठ में फॉरेंसिक साइंस में रिसेंट एडवांसमेंट पर नेशनल सिम्पोज़ियम की हुई शुरुआत

एक्सपर्ट्स ने फोरेंसिक साइंस, एडवांस टीचिंग सहित कई विषयों पर बात की।

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

फोरेंसिक साइंस में विकास पर वैष्णव विद्यापीठ विवि में शुक्रवार से नेशनल सिम्पोजियम हुआ। इसमें प्रोफेशनलिज्म इन फॉरेंसिक साइंस, एडवांस टीचिंग मैथडोलॉजी और ह्यूमेनिटेरियन फॉरेंसिक्स सहित कई विषयों पर एक्सपर्ट्स ने बात की। विषय विशेषज्ञों में आंध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल और जम्मू-कश्मीर सरकार के फोरेंसिक सर्विस एडवाइज़र डॉ. गांधी पी.सी. काज़ा, ख्यात फॉरेंसिक साइंस स्कॉलर और सरदार वल्लभ भाई पटेल नेशनल पुलिस एकेडमी की जॉइंट डायरेक्टर शारदा अवधनम और मेडिको लीगल इंस्टिट्यूट भोपाल के डॉ. अशोक कुमार गुप्ता मौजूद थे।

डॉ. गांधी ने फॉरेंसिक साइंस में प्रोफेशनलिज़्म पर बात करते हुए कहा - फॉरेंसिक स्टडीज़ में रिसर्च बढ़ाने, साइंटिफिक प्रोसेस की इंटेग्रिटी और रिस्पेक्ट बढ़ाने के लिए प्रोफेशनलिज़्म बहुत ज़रूरी है। नई तकनीकों के उपयोग के साथ ही अवैधानिक तरीकों को रोका जाना चाहिए।

स्किल बढ़ाने के लिए सेल्फ मोटिवेशन ज़रूरी

शारदा अवधनम ने कहा - हर क्राइम सीन अलग होता है और हर केस की अपनी चुनौतियां होती हैं इसलिए स्किल एक्विज़िशन के लिए अलग-अलग तरीके अपनाए जाते हैं। यदि आप फॉरेंसिक फील्ड में अपनी स्किल्स बढ़ाना चाहते हैं तो सेल्फ मोटिवेशन सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है। घटनास्थल पर मौजूद चीजें खुद ही आपको कई स्किल्स सिखाती हैं। इसमें आपका अनुभव, सीखने की शैली और कंटेंट डिलिवरी भी मायने रखती है। स्किल एक्वीज़िशन के लिए ट्रेडिशन, मिलेट्री एप्रोच के अलावा एंड्रोलॉजिकल अप्रोच, सेल्फ डायरेक्टेड लर्निंग और एजुकेशन भी होती है। डॉ. गुप्ता ने एसफेक्सिया के विषय में अपनी बात रखी- उन्होंने बताया कि एस्फेक्सिया वो कंडीशन है जिसमें शरीर को पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन नहीं मिलती या बहुत ज्यादा कार्बन डाई ऑक्साइड के कारण नॉर्मल फंक्शन नहीं हो पाता। ये सांस के रास्ते को फिज़िकली रोकने के अलावा किसी दुर्घटना के साइड इफेक्ट के तौर पर भी हो सकता है।

पत्रिका PLUS

इंदौर, शनिवार, 29.09.2018

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में फोरेंसिक साइंस पर नेशनल सेमिनार

फोरेंसिक स्टडीज को बढ़ावा देने के लिए प्रोफेशनलिज्म जरूरी

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर ◆ श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में शुक्रवार को फोरेंसिक साइंस पर नेशनल सेमिनार 'संवाच्य' का आयोजन किया गया।

इसमें आंध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल, जम्मू-कश्मीर सरकारों के फोरेंसिक सर्विस एडवाइजर डॉ. गांधी पीसी काझा ने कहा, फोरेंसिक स्टडीज में रिसर्च बेस्ड कल्चर और वैज्ञानिक प्रक्रिया के लिए सम्मान और इमानदारी को बढ़ावा देने के लिए प्रोफेशनलिज्म लाना होगा।

उन्होंने कहा, फोरेंसिक सेवाओं की गुणवत्ता में विश्वास बढ़ाने के लिए, प्रत्येक फोरेंसिक विज्ञान और फोरेंसिक दवा सेवा प्रदाताओं को कुछ बातें ध्यान में रखनी होती हैं। इसमें नई प्रौद्योगिकियों के सत्यापन और निगमन को बढ़ावा देना, अपनी शिक्षा, प्रशिक्षण, अनुभव और विशेषज्ञता के हिसाब से काम करना, पूर्ण निष्पक्ष जांच कर रिपोर्ट देना आदि शामिल हैं। संयुक्त निदेशक सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी हैदराबाद और सेवानिवृत्त निदेशक, एपी फोरेंसिक साइंस लैब, हैदराबाद शारदा अवधनम ने कहा, हर क्राइम सीन यूनीक होता है। अपनी-अपनी चुनौतियां होती हैं।

एस्फेक्सिया की दी जानकारी : डॉ. अशोक कुमार गुप्ता, निदेशक मेडिको लीगल इंस्टिट्यूट भोपाल ने एस्फेक्सिया के बारे में बताया। उन्होंने कहा, वह ऐसी स्थिति है, जहां शरीर को सामान्य कार्य जारी रखने के लिए पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिलती है या बहुत अधिक कार्बन डाइऑक्साइड होती है। पर्याप्त ऑक्सीजन के बिना, मस्तिष्क में तंत्रिका कोशिकाएं लगभग 2-4 मिनट में मरने लगती हैं और यह अपरिवर्तनीय है।

सेमिनार में वैष्णव विद्यापीठ यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. उपिंदर धर, चांसलर पुरुषोत्तम दास पसारी, कन्वेयर डॉ. कविता शर्मा मौजूद थे।